

‘मादक पदार्थ’ - मानवजाति को निगलने वाला अजगर

अंग्रेजी के कवि मिलटन ने अपनी पुस्तक ‘पेराडाईस लॉस्ट’ में बहुत अच्छा कहा है कि,

“सोच की अपनी प्रमुख भूमिका है और वह अपने आप में परिपूर्ण है। वह स्वर्ग को नरक में और नरक को स्वर्ग में बदल सकती है। यह सोच जीवन का रूख बदल सकती है।”

उपरोक्त पंक्तियों के कथन में सत्यता है। यह सत्यता हमें मनुष्य के दिमाग की बारीकियों और पेचीदगियों को समझने पर बाध्य कर देती है। हैरत होती है, यह देख कर कि अच्छाई को छोड़ बुराई की ओर मनुष्य किस कदर लालायित रहता है। जीवन की तमाम बुराईयाँ उसे आकर्षित करती हैं। वह अच्छा काम कर के खुशी प्राप्त नहीं करना चाहता, बल्कि नशीले पदार्थों के सेवन में झूठी खुशियाँ तलाशता है। मादक पदार्थों के सेवन से जीवन पूरी तरह प्रभावित है। पूरा विश्व ही इस अजगर की चपेट में है।

ये नशाखोर विश्व के किसी भी कोने में मिल जाएंगे। आखिर लोग नशा क्यों करते हैं, इस बात की व्याख्या करना मुश्किल है। फिर भी नशाखोरों को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है— “व्यस्क” और “किशोर”। मादक पदार्थों के सेवन की मात्रा के आधार पर नशाखोरों को “कभी कभार या कर के देखें” और “स्थायी नशाखोर” में भी वर्गीकृत किया जा सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है, आखिर युवा नशीले पदार्थों का सेवन क्योंकर करते हैं ? इसके कई कारण हो सकते हैं। प्रायः युवा वर्ग बड़ों के विरुद्ध अपना विद्रोह या आक्रोश जताने की निमित्त ऐसा करते हैं, माता पिता को चौंकाने के लिए, या फिर जीने की अपनी विशेष शैली दर्शाने की गरज से या “खतरों से क्या डरना” जैसी भावना से प्रेरित होकर नशा करते हैं। कई बार जीवन की छोटी-मोटी परेशानियों से पलायन करते समय इसके सेवन के चक्रव्यूह में बुरी तरह फंस जाते हैं। जीवन में हर क्षण प्रतिस्पर्धा है। असफलता का भय इन्हें सालता है, कभी आंतकित करता है, ऐसे में धीरे धीरे वे परिस्थितियों का डट कर मुकाबला नहीं कर पाते और, उनसे मुँह मोड़ लेते हैं। शायद यही कारण है प्रायः 14 से 17 वर्ष की आयु के किशोर-किशोरियों में नशीले पदार्थों की आदत पड़नी शुरू हो जाती है।

सेवन के शुरुआती दौर में, मित्रों, दोस्तों की बड़ी अहम भूमिका होती है। दरअसल नशे की पहल दोस्तों द्वारा या दोस्तों के दोस्तों द्वारा शुरू होती है। धीरे धीरे मादक पदार्थों के इस अजगर का ज़हर व्यक्ति के पूरे शरीर को प्रभावित करते हुए उसे पंगु बना देता है।

यह सर्वविदित है कि हमारे देश के युवाओं और व्यस्कों में मदिरापान का काफी चलन है, बड़े दुख की बात है, उन्हें शराब सुगमता से उपलब्ध भी हो जाती है। हमारे देश में सड़क दुर्घटनाओं में प्रायः युवाओं की मौत का मुख्य कारण उनका नशे में धुत होकर वाहन चलाना है। शराब पीने से हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, लिवर-क्षति, मस्तिष्क-क्षति और स्वास्थ्य-संबंधी कई अन्य रोग जो जाते हैं। शराब पीते ही यह मानव शरीर के रूधिर-प्रवाह में पहुंच कर पूरे केन्द्रीय तंत्रिका-तंत्र को इस

कदर प्रभावित करती है जिसके कारण अनेक व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जैसे अवसाद, बोलने की शक्ति क्षीण हो जाना, साफ दिखाई न देना, शरीर और मस्तिष्क में संतुलन का बिगड़ना, पैरों का लड़खड़ाना, आँखों का सुख हो जाना, चक्कर आना और जी मिचलाना तथा उबकाई आना।

मदिरापान के अतिरिक्त नशाखोरों में गांजा, चरस कोकीन, हेरोइन, तम्बाकू और नसवार व सूंघने जैसे कई मादक पदार्थ प्रचलित हैं। युवाओं को भांग बेहद प्रिय है, इसका सेवन ये पत्तियों, फूल, तने, और पौधों के बीजों के रूप में करते हैं जिन्हें पहले सुखाया जाता है फिर छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लिया जाता है। प्रायः इसका सेवन सिग्रेट के तंबाकू में मिलाकर धूम्रपान के रूप में किया जाता है, परन्तु इसे खाया भी जा सकता है।

हशीश को कैनेबिस नाम के पौधे के फूलों के ऊपर जमी रेज़िन से बनाया जाता है। हशीश का भी धूम्रपान के रूप में इस्तेमाल किया जाता है या फिर इसे खाया भी जाता है, तथा मैरिजुआना के मुकाबले में यह 5 से 8 गुना अधिक तक मादक होती है।

कैनेबिस से तैयार किए जाने वाले अन्य पदार्थ हैं भांग और गांजा, आदि जिन्हें संसार के विभिन्न भागों में इस्तेमाल किया जाता है।

नशाखोरों द्वारा कोकीन का भी प्रचुर मात्रा में इस्तेमाल किया जाता है। कोकीन, नासिका में श्लेष्मा झिल्ली को क्षति पहुंचाती है और नशाखोर की मानसिकता पर गंभीर प्रभाव डालती है। इसी प्रकार हेरोइन, जो मादक पदार्थों में सबसे घातक और लत डालने वाला पदार्थ है, का नशा करने से मस्तिष्क क्रियाशील नहीं रहता। तम्बाकू का सेवन भी भारतवर्ष में नशे के रूप में व्यापक रूप से प्रचलित है। तम्बाकू का इस्तेमाल सिग्रेट, सिगार, पाईप, तम्बाकू, नसवार और गुटके, चुटकी आदि के रूप में होता है। तम्बाकू का नशा उत्तेजक भी है, और अवसाद कारक भी। धूम्रपान करने वाले को आरंभ में शरीर हल्का फुल्का, दिमाग शांत, धड़कन थोड़ी तेज हाथों, पैरों में गुदगुदी सी महसूस होती है। तम्बाकू के निरंतर सेवन से स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है जिससे, कैंसर, फेंफड़ों का रोग, श्वास में तकलीफ, मसूड़ों के रोग, जबड़ों का क्षतिग्रस्त होना तथा कई प्रकार के संक्रमण और एलर्जी जैसी स्वास्थ्य समस्याएं हो जाने की संभावना होती है।

इससे पहले नशे का जादू पूरी तरह छा जाए, हमें नशाखोरी जैसी समस्या पर गौर करने की अत्यंत आवश्यकता है। हमें मिल कर इस बुराई को जड़ से मिटाना होगा।

इस समस्या का निदान कई बातों पर निर्भर है, जैसे नशे की लत, नशे की किस्म, नशे की मात्रा, नशा करने वालों की हालत और नशा से छुटकारे के लिए उपलब्ध सेवाओं पर निर्भर करता है। कई बार नशा करने वाले को उसके परिवार, मित्रों, कार्यस्थल के सहयोगियों द्वारा पूरी सहायता प्राप्त होती है जिससे वो इस लत से छुटकारा पाने के लिए अपनी मर्जी से मान जाता है, परन्तु कुछ ऐसे नशाखोर भी होते हैं जिन्हें इस बुरी आदत को छुड़ाने के लिए अदालत की सहायता की ज़रूरत पड़ती है ताकि उन्हें नशा मुक्ति संस्थाओं में इलाज के लिए भेजा जा सके।

नशाखोरी की समस्या का समाधान इतना आसान नहीं। ऐसा रातों-रात संभव नहीं। हमें मिलकर और कत संकल्प होकर कुछ करना होगा। इसकी शुरुआत घर से, परिवार से, स्कूल, कॉलिज से, पास-पड़ोस से करनी होगी। माता-पिता को अपने बच्चों के प्रति सजग रहना होगा। किसी ने सही कहा है पाप से घणा करें, पापी से नहीं। नफरत नशाखोर से नहीं, नशे से करें क्योंकि हो सकता है नशाखोर बदहवास, भ्रमित, असुरक्षित और सब ओर से उपेक्षित महसूस करता हो। याद रहे वो भी किसी का पुत्र, भाई, पति या पड़ोसी होगा।

हमें स्वामी विवेकानन्द की उस बात की ओर ध्यान देना होगा कि जो चीज़ आपके शरीर, बुद्धि और आत्मा को कमज़ोर करे, उसे ज़हर मानकर तुरन्त त्याग देना चाहिए।

इसलिए इन सुनहरे विचारों में आस्था रखते हुए, यह मानकर कि नशा कैसा भी हो, ज़हर से कम नहीं, इसका कदापि सेवन न करें और दढ़ता पूर्वक 'न' कहना सीखें, तभी हम नशा मुक्त दुनिया में जीने का स्वप्न देख पायेंगे। आईये चलते चलते "कथोप्निशद" की उस सूक्ति पर नज़र डालें, जिसका संदेश है:

उठो, जागो, और अनवरत चलते रहो,
जब तक कदम मंजिल को न छू लें।